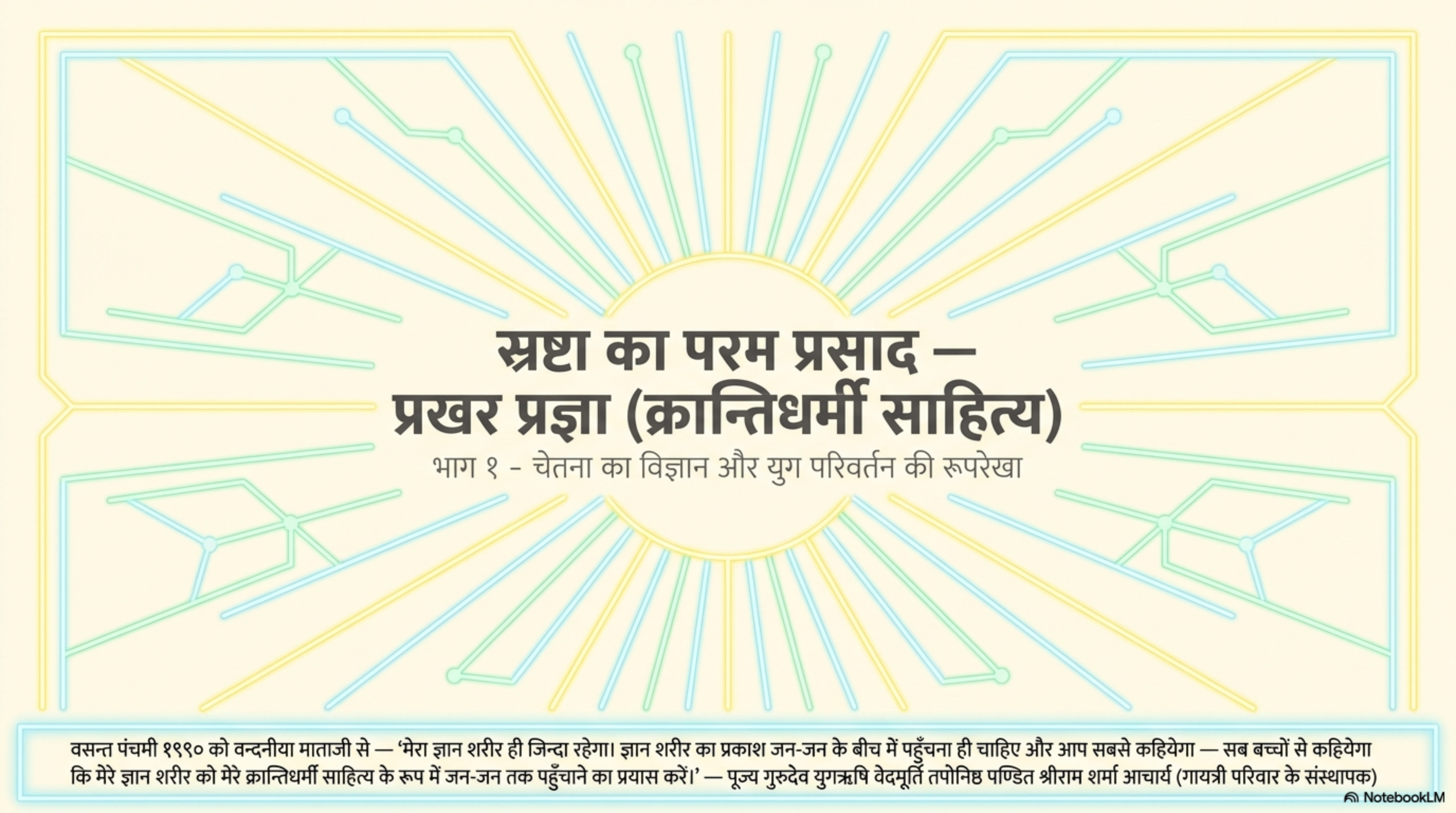




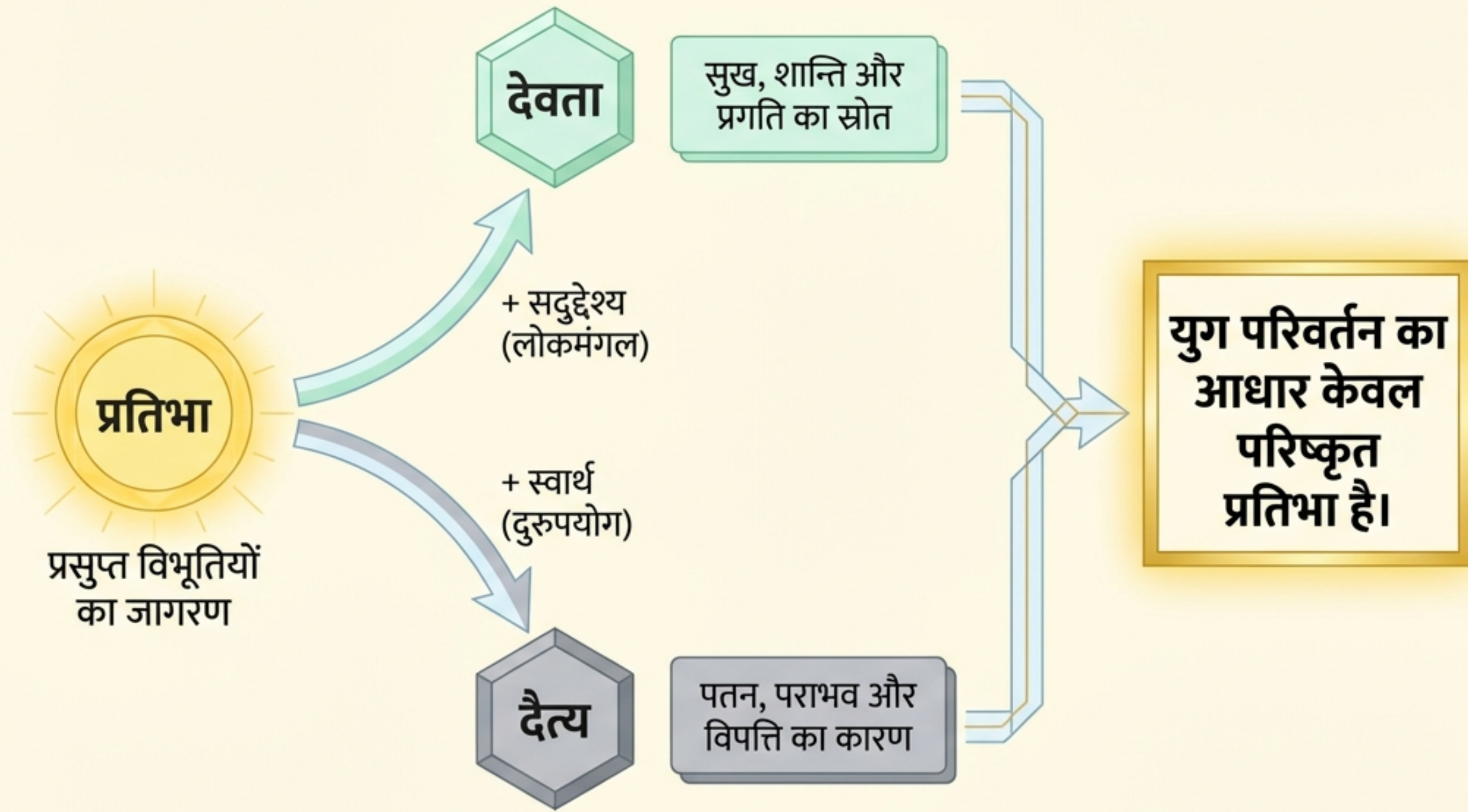
स्रष्टा का परम प्रसाद – प्रखर प्रज्ञा (क्रान्तिधर्मी साहित्य)

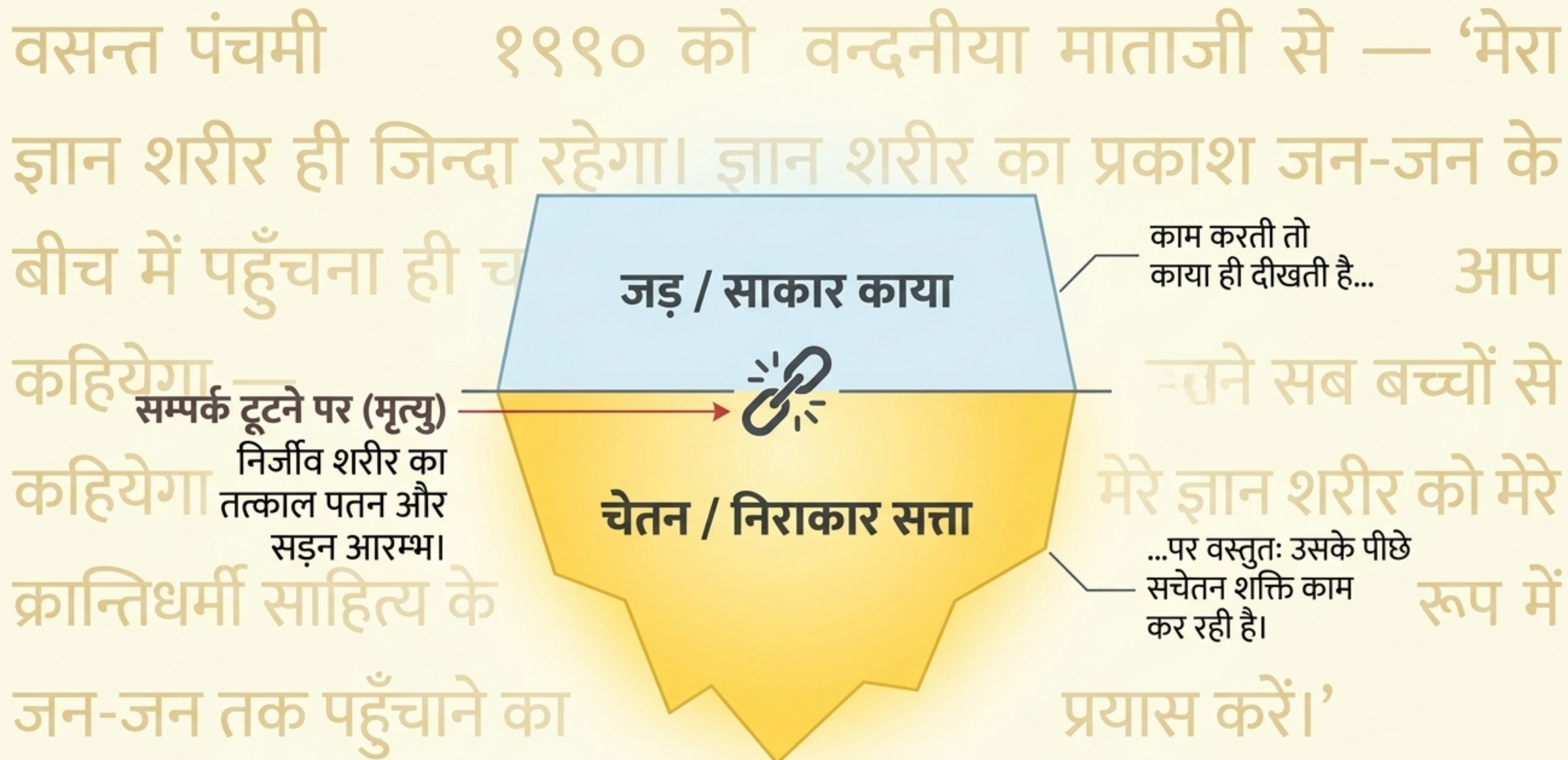
भाग १ - चेतना का विज्ञान और युग परिवर्तन की रूपरेखा

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — ‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।’ — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

‘वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — ‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना
और आप सबसे से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य
रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।’

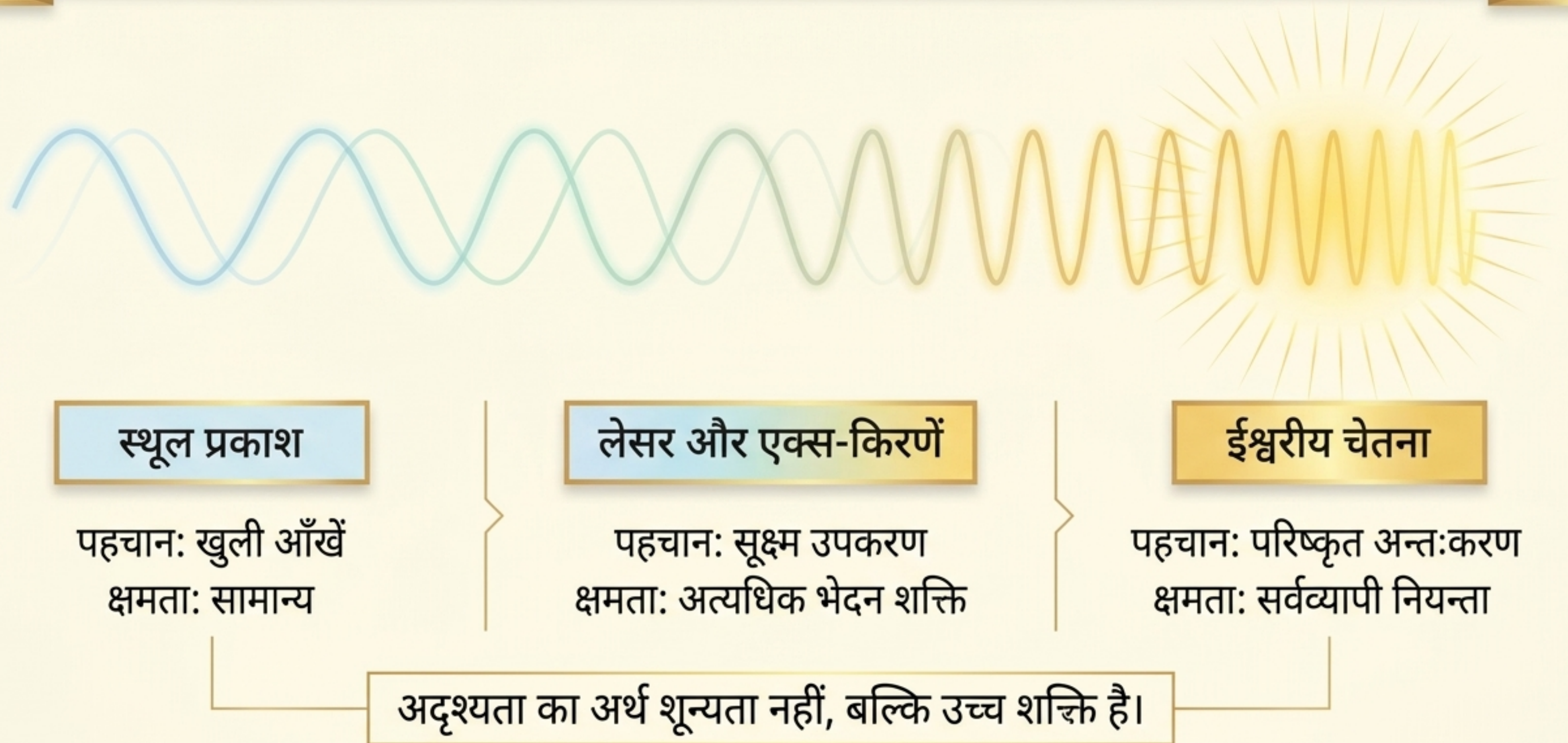
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

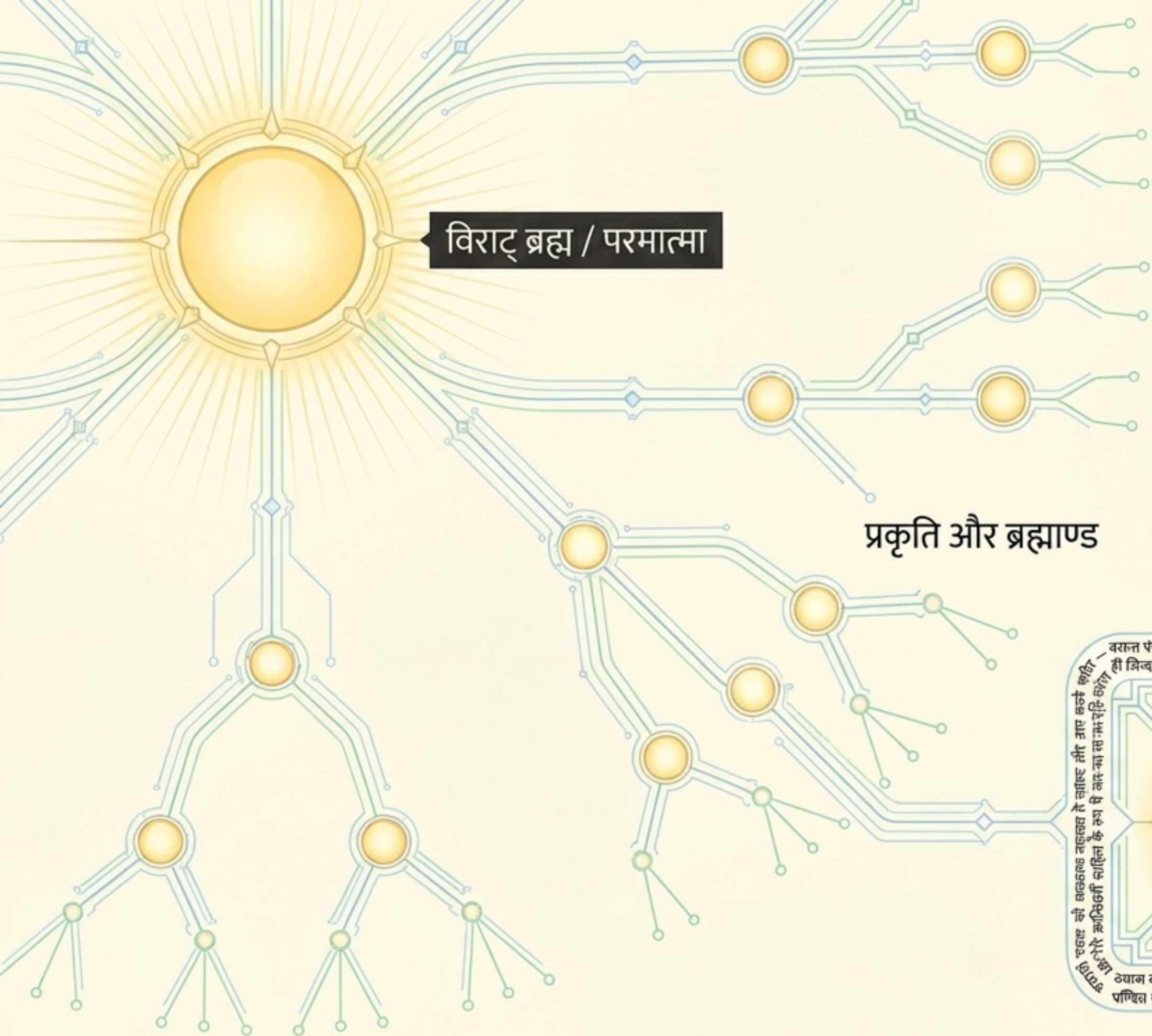




— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — ‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।’
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)





विराट् ब्रह्म / परमात्मा

प्रकृति और ब्रह्माण्ड

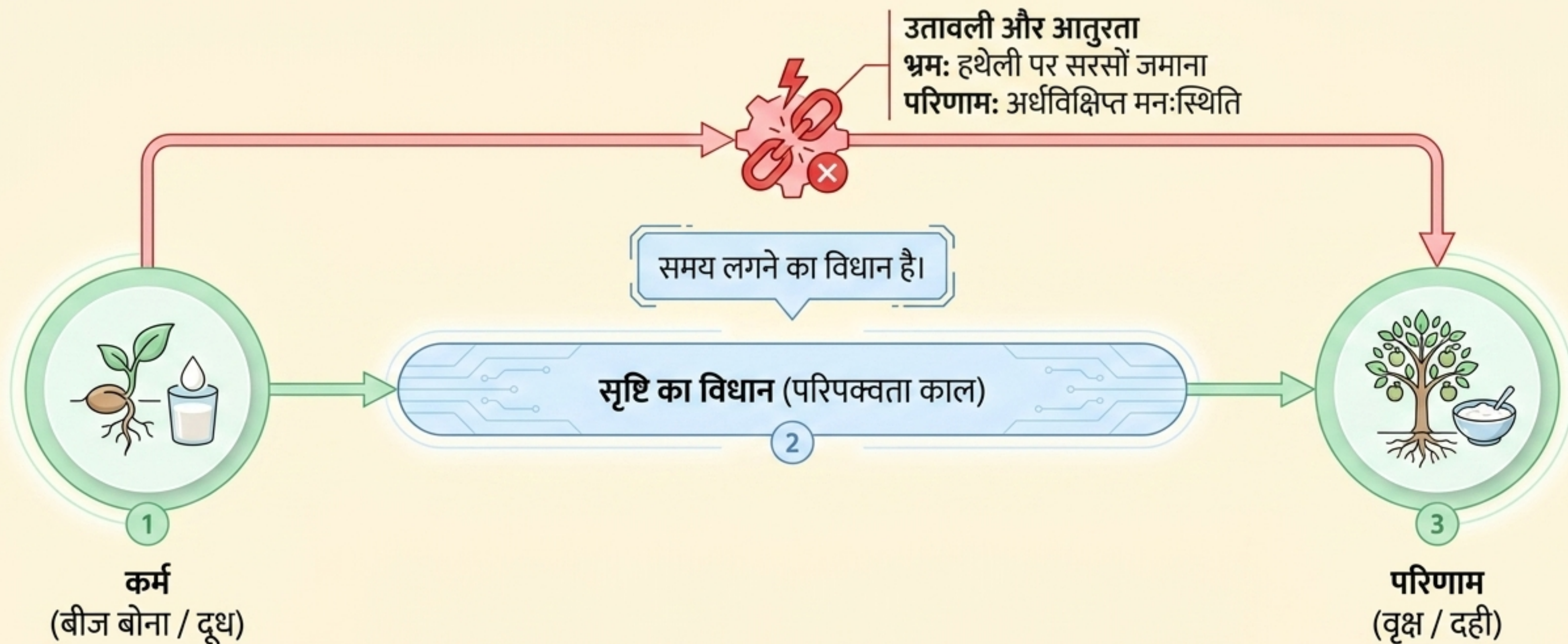
जीव/
मनुष्य

मनुष्य में ईश्वरीय अंश का स्तर सर्वोच्च है।

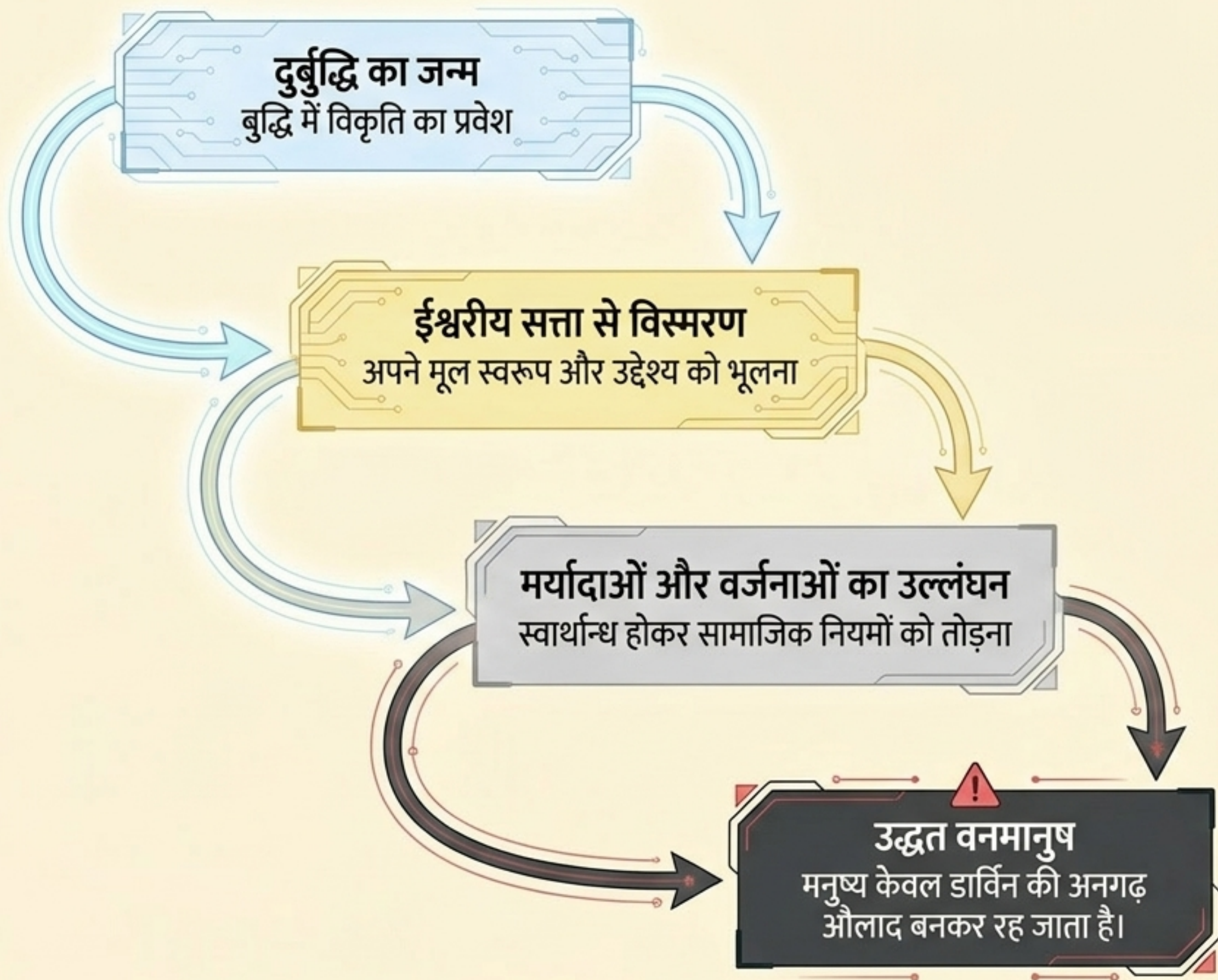
🔑 सक्रियण: निजी पुरुषार्थ (प्रसुप्त शक्तियों का जागरण)

वरुण पंचमी १९९० को कवनीया माताजी से — 'मेरा इयन ही ज़िन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकारा अन-अन के बीच के' आज की दुनिया की माहिद और आज तकसे भी दूरि के विचार ही चाहिए और आज की दुनिया को से जल्दी कविता के अंगे

ठेकान कहे।' — पूजा गुरुदेव युगकवि वेदयुनि ठपोनिह पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (मायवी परिवार के संस्थापक)

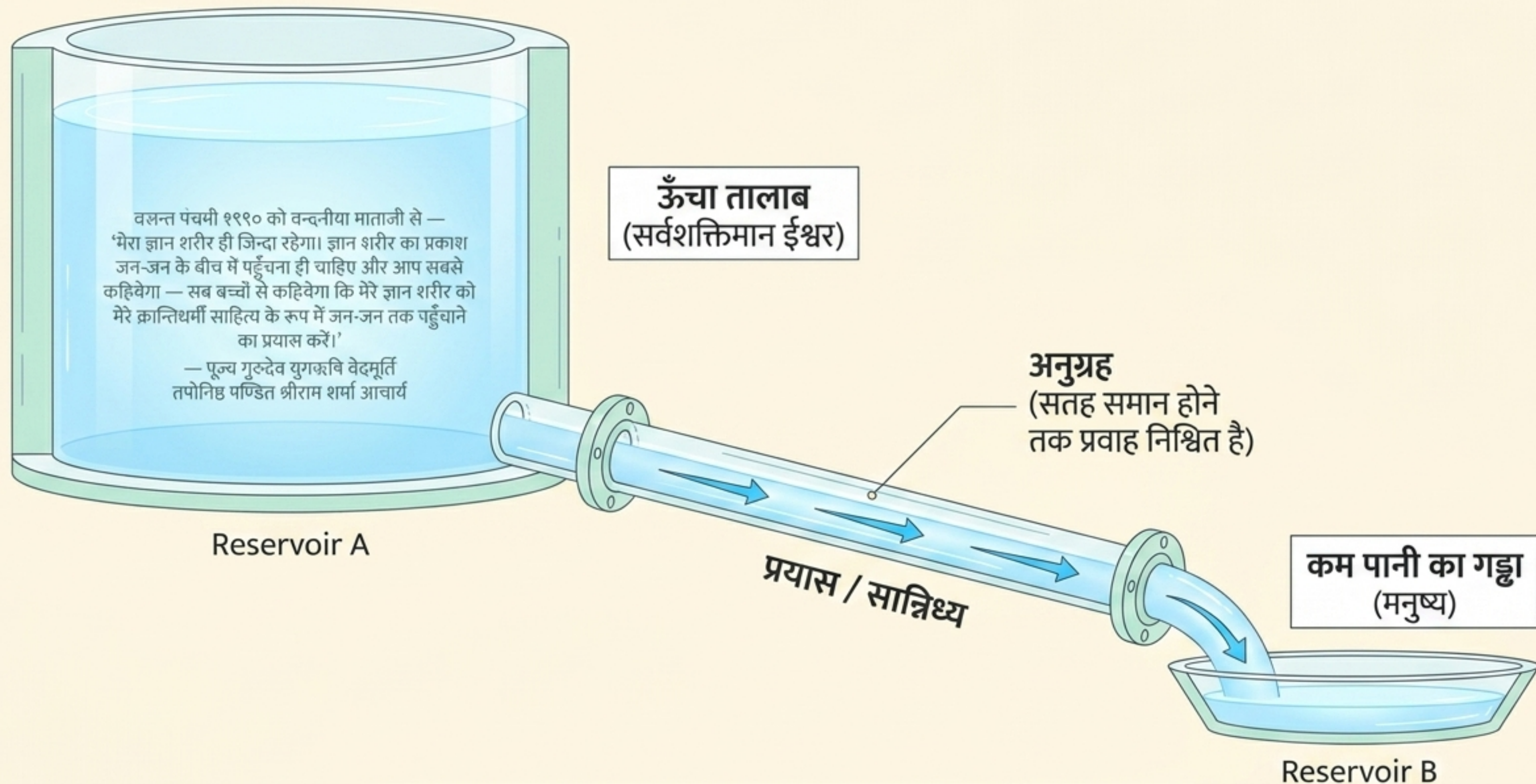


वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — ‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।’ — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन
के बीच में पहुँचना ही चाहिए और
आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों
से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर
को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के
रूप में जन-जन तक पहुँचाने
का प्रयास करें।’

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।’

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



महानता का
सान्निध्य

चन्दन का प्रभाव

परिणाम: झाड़-झंखाड़ को भी सुगन्धित कर देता है।

स्वाति बूँद का गिरना

परिणाम: सीप के भीतर मूल्यवान मोती का निर्माण।

पारस का स्पर्श

परिणाम: सामान्य लोहे को स्वर्ण बना देता है।

निष्कर्ष: जब हम सांसारिक सशक्त लोगों से जुड़ने का इतना प्रयास करते हैं, तो सर्वशक्तिमान साथी (ईश्वर) की उपेक्षा क्यों?

ईश्वर सम्बन्धी भ्रान्तियाँ बनाम वास्तविकता

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — 'मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा - कि क्रौने आरने

भ्रान्ति (कबायली ईश्वर)

उपहार और चाटुकारिता का लालची।

छोटी भूलों या कर्मकाण्ड की त्रुटि पर आगबबूला होना।

अनुचित मनोकामनाओं को रिश्वत लेकर पूरा करना।

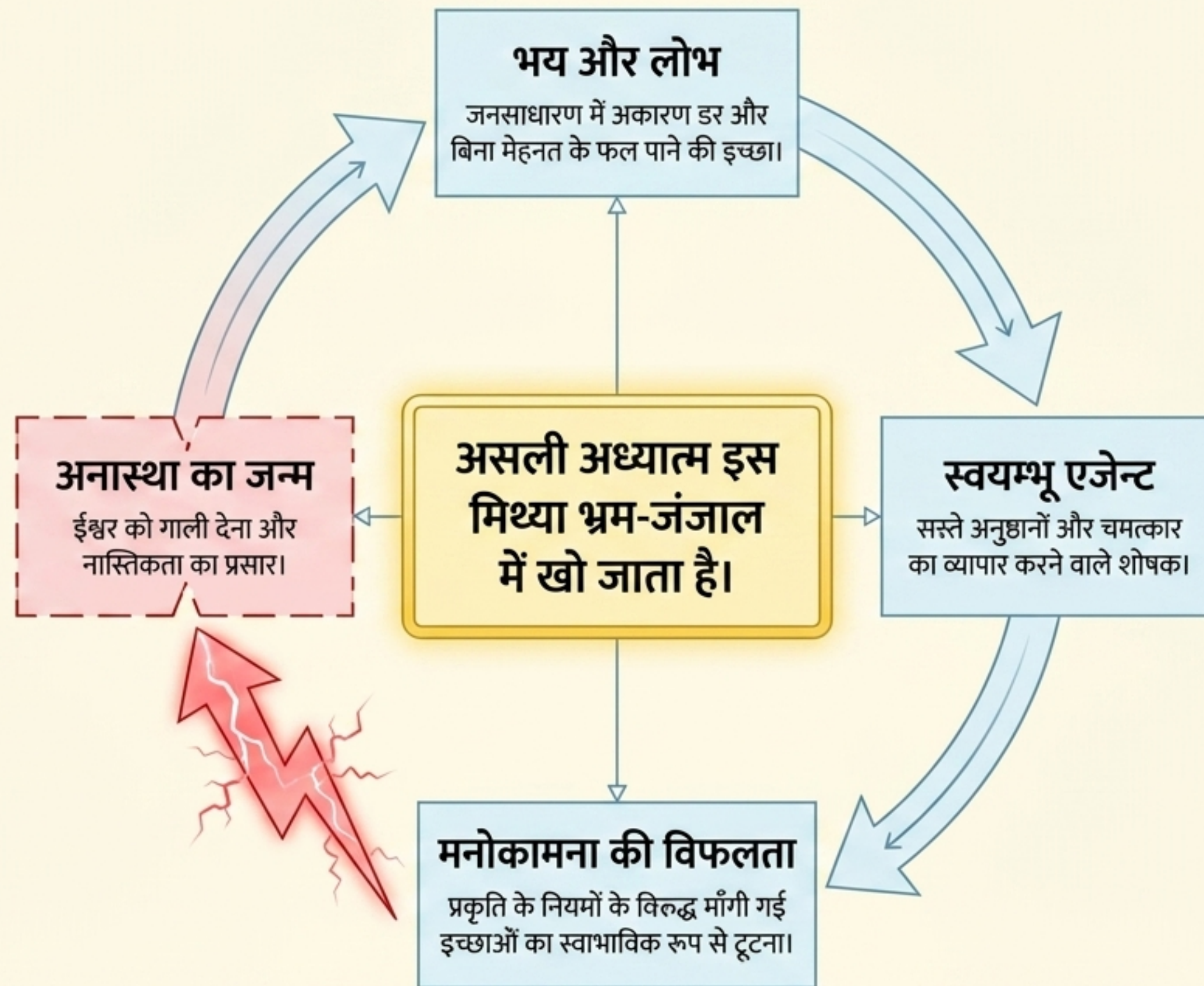
वास्तविकता (सार्वभौमिक ईश्वर)

सर्वव्यापी, न्यायकर्ता और पूर्णतः निस्पृह।

मनुष्य की पात्रता और प्रामाणिकता का पारखी।

सृष्टि के शाश्वत नियमों का अटूट संचालक।

कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।' — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोणिष्ठ श्रीराम शर्मा आचार्य



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — ‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।’ — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के
बान शरीर चाहिए। और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि
कहिनोगा कि मेरे ज्ञान शरीर को नेह को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप
के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।’

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



Core Insight Box

इनकी ऐतिहासिक सफलता केवल मानवीय भाग-दौड़ नहीं थी,
बल्कि आत्मबल और ईश्वरीय अनुग्रह का महा-संयोग था।

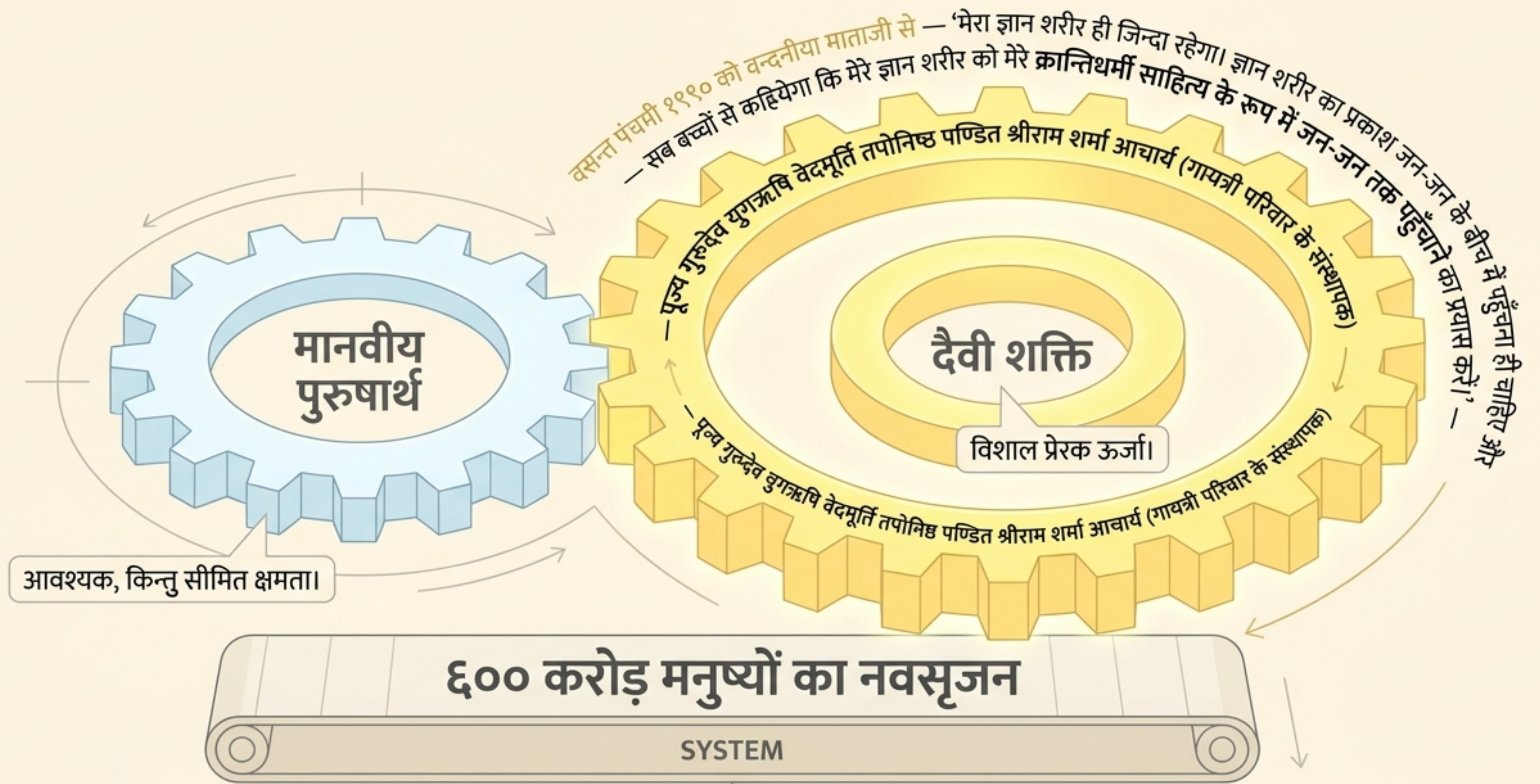
बुद्ध
धर्म-चक्र प्रवर्तन

चाणक्य
अखण्ड राष्ट्र निर्माण

रामकृष्ण / विवेकानन्द
चेतना जागरण

गाँधी
युग परिवर्तन

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — 'मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँच ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।' — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य



इतनी बड़ी क्रान्ति केवल योजना या मानवीय भाग-दौड़ से संभव नहीं, इसके लिए ईश्वरीय ऊर्जा का समावेश अनिवार्य है।

अनुग्रह माँगने की आवश्यकता नहीं, केवल अपना पात्र बड़ा करें।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — ‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।’
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)